संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

द्वारा आयोजित

अन्तर–राष्ट्रीय संगोष्ठी

विकसित भारत की संकल्पना में संगीत एवं अन्य कलाओं की भूमिका व योगदान

12 व 13 दिसम्बर 2024

स्थान

स्वरांगन व्याख्यान कक्ष

संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संयोजिका
प्रो० रेनू जौहरी

विषय प्रवर्तन

विकसित भारत की संकल्पना में संगीत एवं अन्य कलाओं की भूमिका व योगदान

किसी भी देश के विकसित होने में उस देश की भाषा, कला, संस्कृति की विशेष भूमिका होती है। वृहद् रूप में देखा जाय तो संस्कृति के अन्तर्गत समस्त कलायें समाहित हो जाती है। यह कलाएं किसी भी देश की संस्कृति का अभिन्न अंग है। कलाओं में भी संगीत की स्थिति सर्वोच्च है। किसी भी देश का संगीत उसकी संस्कृति का द्योतक है। भारतीय संगीत की गायन, वादन, नृत्य शैलियों में भारतीय संस्कृति के दर्शन होते है। भारतीय स्वर, बोल, प्रस्तुतिकरण का ढ़ंग, बैठक, उद्देश्य इत्यादि के माध्यम से भारतीय संस्कृति की ही झलक मिलती है। आज सत्यम् शिवम् सुन्दरम् स्वरूप भारतीय संगीत से विश्व समुदाय को शान्ति मिलती है। वर्तमान की भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में चिन्ता, निराशा, विक्षोभ, अवसाद ग्रस्त मन को भारतीय संगीत सुकून देता है । यही कारण है कि आज पूरे विश्व में भारतीय शास्त्रीय गायन, वाद्य संगीत व नृत्य को अपनाया जा रहा है । लोग भारतीय गुरूओं से संगीत शिक्षा ग्रहण कर रहे है। कितने ही उच्च कोटि के कलाकार सदा के लिए विदेशों में बस गये व वहॉ भारतीय संगीत का शिक्षण व प्रचार– प्रसार कर रहे है। भारतीय संगीत भारतीय जीवन शैली है जो कि भावनाओं के परिष्कार में विश्वास रखता है न कि यांत्रिक गतिविधियों में । भारत जब भी विश्व गुरू की उपाधि पुनः प्राप्त करेगा तो उसमें संगीत एवं अन्य कलाओं का विशेष योगदान होगा। हमें अभी से अपनी भूमिका का निर्वहन करना है। इसके लिए तद् विषयक विद्वानों / कलाकारों के मध्य विचार – विमर्शोपरान्त निष्कर्षों का क्रियान्वयन आवश्यक है। उक्त संगोष्ठी हमें यही सुअवसर प्रदान करेगी इसमें तनिक भी संशय नहीं है।

बीज विषय

विकसित भारत की संकल्पना में संगीत एवं अन्य कलाओं की भूमिका व योगदान ।

उपविषयों की सूची

1.विकसित भारत की संकल्पना में शास्त्रीय संगीत की भूमिका व योगदान ।

- दक्षिण भारतीय गायन के परिप्रेक्ष्य में
- दक्षिण भारतीय तंत्री एवं सुषिर वाद्य – वादन के परिप्रेक्ष्य में
- दक्षिण भारतीय अवनद्ध एवं घन वाद्य – वादन के परिप्रेक्ष्य में
- उत्तर भारतीय गायन शैलियाँ
- उत्तर भारतीय तंत्री एवं सुषिर वाद्य – वादन के परिप्रेक्ष्य में
- उत्तर भारतीय अवनद्ध एवं घन वाद्य – वादन के परिप्रेक्ष्य में

2. भारत वर्ष के शास्त्रीय नृत्य –

- कत्थक
- भरतनाट्यम्
- ओडिसी
- मणिपुरी
- कुच्चिपुड़ी
- कथकली इत्यादि।

3. विकसित भारत की संकल्पना में उपशास्त्रीय एवं सुगम संगीत की भूमिका व योगदान ।

- उपशास्त्रीय गायन के परिप्रेक्ष्य में
- उपशास्त्रीय वादन के परिप्रेक्ष्य में

4.भारत वर्ष के लोक संगीत

- भारत वर्ष के लोक गायन।
- भारत वर्ष के लोक वाद्य ।
- भारत वर्ष के लोक नृत्य ।

5. विकसित भारत की संकल्पना में साहित्य की भूमिका ।

6. विकसित भारत की संकल्पना में चित्रकला , स्थापत्य कला, मूर्तिकला इत्यादि की भूमिका व योगदान।

7. अन्य सम्बन्धित विषय ।

शोध प्रपत्र भेजने हेतु निर्देश–

1. शोध प्रपत्र/लेख– हिन्दी में कृतिदेव–10 फॉन्ट साइज़–14 अथवा अंग्रेजी में टाइम्स रोमन, फॉन्ट साइज़–12 में स्वीकृत किये जायेंगे, प्रपत्र संस्कृत अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में भी मान्य होंगे।

2. अधिकतम शब्द सीमा– 2500

3. सारांश 150 शब्द व 4–5 मुख्य शब्द

4. मौलिक व अप्रकाशित शोध प्रपत्र/लेख ही प्रकाशित हो सकेंगे।

5. शोध प्रपत्र/लेख PDF व World file दोनों format में भेजें।

6. प्रपत्र भेजने के लिये ई.मेल आई. डी.–

kutap7490@gmail.com

7. प्रपत्र भेजने की अन्तिम तिथि – 30 सितम्बर 2024

पंजीकरण शुल्क–
शिक्षकों के लिए– 2500/–
शोधार्थियों के लिए– 1700/–
विद्यार्थियों के लिए– 600/–
शुल्क जमा करने हेतु
गूगल पे व फोन पे नम्बर– 9198328939

Registration with Google Form:- https://forms.gle/58MwMAHJcJ9s7PiJA

For offline registration contact no.
Prof.Renu Johri – 9198328939
Pronnati Tiwari – 7850860748
Divya Gupta -8299239220
Uday Narayan Pandey - 8181869100
Shweta Sharma- 7985309445